International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232, Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 2; Issue 4; July 2016; Page No. 14-15

पुराणों का संक्षिप्त परिचय

सुरेन्द्र कुमार शर्मा

पीएच.डी. (संस्कृत) जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू

1. प्रस्तावना

पुराण हमारे भारतवर्ष के अमूल्य रत्न हैं। पुराणों में हमें विभिन्न प्रकार की विद्याओं का वर्णन मिलता है–यथा–ज्योतिष, काव्य, संगीत, वास्तुशास्त्र, व्रतकथन, प्रापरिचतवर्णन, अवतारवर्णन, सामुद्रिकशास्त्रवर्णन, नाटकवर्णन, भूमिवर्णन, राजधर्मवर्णन, आश्रमवर्णन, नीतिशास्त्रवर्णन, लौकिक–पारलौकिक वर्णन इत्यादि सब वस्तुओं का वर्णन पुराणों के ज्ञान से प्राप्त होता है पुराण शब्द का उच्चारण करने से हमें इस बात की ओर संकेत मिलना प्रारम्भ हो जाता है कि पुराणों में अनेक प्रकार के विषय हैं, जिनको जानने की जिज्ञासा हमारे ह्रदय में उत्पन्न होती है। अठारह पुराणों का विवरण :– अग्निपुराण, कूर्मपुराण, ब्रह्मपुराण, पद्मपुराण, विष्णुपुराण, वायुपुराण, श्रीमद्भागवतपुराण, नारदपुराण, मार्कण्डेयपुराण, भविष्यपुराण, ब्रह्मवैवर्तपुराण, लिंगपुराण, वराहपुराण, स्कन्धपुराण, वामनपुराण, मत्स्यपुराण, गरूढ़पुराण, ब्रह्माण्डपुराण।

प्रत्येक पुराण में मानवजीवन को स्वस्थ बनाने के लिए अनेक प्रकार की विद्याओं का वर्णन है जोकि मानवजीवन के लिए बहुत उपयोगी सिद्ध होती हैं। इस प्रकार इन पुराणों में कौन–कौन से विशेष इत्यादि हैं। इनका संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है[1]:–

2. अग्नि पुराण : इस पुराण को यदि हम भारतीय विद्याओं का विश्वकोष कहें, तो कोई अनुचित बात नहीं मानी जाएगी। इन पुराणों का उद्देश्य जन साधारण में ज्ञातव्य विद्याओं का प्रचार करना भी था, इसका हमें संपूर्ण परिचय इस बात से मिलता है। इस पुराण में 383 अध्यायों में अनेक प्रकार के विषयों का सन्निवेश कम आश्चर्य का विषय नहीं है। इस प्रकार के अनुशीलन करने से हमें समस्त ज्ञान का परिचय मिल सकता है। इसका प्रमाण करना सर्वथा सच्चा ही प्रतीत होता है–

आग्नेय हि पुराणेऽस्मिन् सर्वाः विद्या प्रदर्शिताः। [2]

3. कूर्मपुराण : कूर्मपुराण में हमें पता चलता है कि इसमें चार संहितायें थी। ब्राह्मी संहिता, भागवती संहिता, सौरी संहिता, वैश्णवीसंहिता। किन्तु इस समय केवल ब्राह्मी संहिता ही उपलब्ध होती है और उसी का नाम कूर्मपुराण है। साथ ही भागवत पुराण तथा मत्स्यपुराण के अनुसार इसमें 18000 श्लोक होने चाहिए थे, परन्तु इस समय उपलब्ध पुराण में मात्र 6000 श्लोक ही मिलते हैं। कहने का अभिप्राय यह है कि इस ग्रन्थ का केवल तृतियांश ही उपलब्ध है। विष्णु भगवान् ने कूर्म अवतार लेकर इन्द्रद्युम्न नाम के विष्णु भक्त राजा को इस पुराण का उपदेश दिया था। इस प्रकार यह कूर्म पुराण से अभिहित किया जाता है।

4. ब्रह्मपुराण : इस पुराण को आदिपुराण के नाम से भी जाना जाता है। ब्रह्मपुराण के अध्यायों की संख्या 245 तथा श्लोकों की संख्या 14000 के आस पास मानी जाती है। इस पुराण में समस्त विषयों का वर्णन उपलब्ध होता है। इसमें सृष्टि कथन के पश्चात् सूर्यवंश तथा सोमवंश का अत्यन्त संक्षिप्त परिचय हमें प्राप्त होता है। ब्रह्मपुराण में पार्वती आख्यान बड़े विस्तारपूर्वक से 20 अध्याय 52 के अन्नतर गंगा, गौतमी, चक्रतीर्थ, कृतिकातीर्थ, पुत्रतीर्थ, यमतीर्थ, आपस्तम्भतीर्थ इत्यादि अनेक प्रकार के तीर्थों के महात्म्य गौतमी महात्म्य के अन्तर्गत अध्याय 70–175 दिए गए हैं, साथ ही इसमें भगवन् कृष्ण का भी वर्णन 32 अध्याय में बड़े विस्तार के साथ वर्णित हैं। इसका कथानक वही है, जिसका वर्णन भगवान् के दशम स्कन्ध में उपलब्ध होता है।[3]

5. पद्मपुराण : यह पुराण परिमाण में स्कन्ध पुराण को छोड़कर अद्वितीय माना जाता है। इस पुराण में महाभारत का आधा तथा भागवतपुराण से तीन गुणा अधिक समझना चाहिए। इस पुराण के दो संस्करण हमें उपलब्ध होते हैं– बंगाली, देवनागरी। बंगाली संस्करण अभी तक प्रकाशित नहीं हुआ है, देवनागरी संस्मरण के आन्नदाश्रम संस्करण में छः खण्ड हैं– आदि, भूमि, ब्रह्मा, पाताल, सृष्टि तथा उत्तर खण्ड।

6. विष्णु पुराण : यदि दार्शनिक महत्व की दृष्टि से भागवतपुराण सम्पूर्ण पुराणों की श्रेणी में प्रथम स्थान रखता है, तो विष्णु पुराण निश्चय ही द्वितीय स्थान का अधिकारी माना जाएगा। यह पुराण वैष्णव दर्शन का मूल आलम्बन है। इसलिए आचार्य रामानुज ने अपने भाष्य में इसका प्रमाण तथा उद्धरण बड़ी बहुलता से दिया है। यह पुराण परिमाण में यह न्यून होते हुए भी अधिक महत्त्व रखता है। इस पुराण के खण्डों को अंश भी कहते हैं। इसमें अंशों की संख्या 6 तथा अध्यायों की संख्या 126 है।[4]

7. वायुपुराण : इस पुराण को अत्यन्त प्राचीन माना जाता है कवि बाणभट्ट ने अपनी कादम्बरी में इसका उल्लेख 'पुराणे वायु प्रलपितम' लिखकर किया है। अतः इस कथन से हमें ज्ञात होता है कि इस पुराण की रचना बाणभट्ट से बहुत पहले हो चुकी होगी। यह पुराण अन्य पुराणों की उपेक्षाकृत न्यून हैं। परन्तु अनेक प्रकार के ज्ञानों का स्त्रोत है। यह पुराण के अध्यायों की संख्या मात्र 112 है। इसके श्लोकों की संख्या 11000 के लगभग है। इस पुराण में चार खण्ड हैं, जोकि पाद कहे जाते हैं– प्रक्रियापाद, अनुशङ्गपाद, उशोद्धातपाद तथा उपसंहार पाद।

8. श्रीमद्भागवतपुराण : यह पुराण संस्कृत साहित्य का बहुमूल्य रत्न है। इस पुराण को भक्तिशास्त्र का सर्वस्य माना जाता है। यह पुराण निगम–कल्प–तरू का स्वयं गलित अमृतमय फल है। वैष्णव आचार्यों ने प्रस्थानत्रयी की तरह ही भागवत को भी अपना उपजीव्य माना है। बल्लभाचार्य भागवत को महर्षि व्यासदेव की समाधि भाषा कहते हैं। कहने का अभिप्राय है कि भागवत पुराण के तत्वों का प्रभाव बल्लभ सम्प्रदाय और चैतन्य सम्प्रदाय पर बहुत अधिक पड़ा है। इन सम्प्रदायों ने भगवत पुराण के अध्यात्मिक तत्वों का निरूपण अपनी–अपनी पद्धति से किया है। श्रीमद्भागवत पुराण अद्वैत तत्त्व का भी प्रतिपादन स्पष्ट शब्दों में करता है।

9. नारदपुराण : बृहत–नारदपुराण नामक एक उपपुराण भी उपलब्ध होता है। अतः उस पुराण से अलग करने के लिए इसे नारदीय नाम दिया गया है। नारदपुराण के दो भाग हैं पूर्वभाग तथा उत्तर भाग। पूर्वभाग में अध्यायों की संख्या 125 है, जबकि उत्तरभाग में अध्यायों की संख्या 82 है। सम्पूर्ण नारदपुराण में श्लोकों की संख्या 25000 है। इस पुराण को ऐतिहासिक दृष्टि से बड़ा महत्त्वपूर्ण माना जाता है।

10. मार्कण्डेयपुराण : इस पुराण का नामकरण मार्कण्डेयऋषि द्वारा कथन किए जाने से हुआ है। इस पुराण के अध्यायों की संख्या 137 है तथा इसके श्लोकों की संख्या 9000 है। मार्कण्डेय पुराण का 'दुर्गा सप्तशती' एक विशिष्ट अंश है। इस पुराण में देवी भक्तों के लिए सर्वस्वरूप दुर्गा का पवित्र चरित्र बड़े विस्तार के साथ दिया गया है।

11. भविष्यपुराण : नारद पुराण के अनुसार ही भविष्य पुराण के भी पाँच पर्व हैं– ब्राह्मपर्व, विष्णु पर्व, शिवपर्व, सूर्यपर्व तथा प्रतिसर्ग पर्व। भविष्य पुराण के श्लोकों की संख्या 14000 है। इस पुराण में सूर्य पूजा का विशेष रूप से वर्णन है। सूर्योपासना के रहस्य तथा कलि में उत्पन्न विभिन्न ऐतिहासिक राजवंशों के इतिहास जानने के लिए यह पुराण नित्तान्त उपादेय है।[5]

12. ब्रह्मवैवर्तपुराण : इस पुराण में श्लोकों की संख्या लगभग 18000 हैं। इस प्रकार यह स्पष्ट होता है कि यह पुराण भागवत पुराण की अपेक्षा परिणाम में छोटा नहीं है। इस ब्रह्मवैवर्तपुराण में चार खण्ड हैं– ब्रह्मखण्ड, प्रकृतिखण्ड, गणेशखण्ड, कृष्णखण्ड।

13. लिंगपुराण : लिंगपुराण में भगवान् शिव की लिंगरूप से उपासना विशेष रूप से दिखाई गई है। शिवपुराण में कहा भी गया है कि 'लिंगस्य चरितोक्तत्वात पुराण लिंगमुच्य'। यह पुराण अन्य पुराणों की अपेक्षाकृत लघु है। इस पुराण में अध्यायों की संख्या मात्र 163 है तथा इस पुराण में श्लोकों की संख्या 11000 है। इस पुराण के दो भाग हैं– पूर्वभाग तथा उत्तरभाग। यहाँ पर लिंग उपासना की उत्पत्ति बताई गई है। शंकर के 28 अवतारों का वर्णन इसमें हमें उपलब्ध होता है।

14. वराहपुराण : वराहपुराण में भगवान् विष्णु के वराहरूप धारण कर पृथ्वी का पाताललोक से उद्धार किया था। इस कथा से मुख्यतः सम्बन्ध रखने के कारण इस पुराण का नाम वराहपुराण पड़ा। इस पुराण में अध्यायों की संख्या 218 है तथा श्लोकों की संख्या 24000 है। इस पुराण के दो अंश महत्त्वपूर्ण माने जाते हैं– मथुरा माहात्मय तथा नचिकेतोपाख्यान।

15. स्कन्धपुराण : इस पुराण में स्वामी कार्तिकेय ने शैव तत्वों का निरूपण किया है, इसलिए इस पुराण का नाम स्कन्धपुराण है। यह सबसे वृहतकाय पुराण है। इस पुराण की मौटाई भागवत पुराण से लगभग पाँच गुणा ज्यादा है। इस पुराण की श्लोक संख्या 81000 है जोकि लाख श्लोकात्मक महाभारत से केवल एक पंचमाशं ही कम है। इस पुराण के अन्तर्गत अनेक संहिताएँ खण्ड तथा माहात्मय हैं। इसी पुराण के अन्तर्गत सूतसंहिता के अनुसार इस पुराण में छः संहितायें हैं, जोकि अपने ग्रन्थ परिमाण के साथ इस प्रकार हैं– सनत्कुमार संहिता, सूत संहिता, शंकरसंहिता, वैष्णवसंहिता, ब्रह्मसंहिता तथा सौर संहिता।[6]

16. वामन पुराण : इस पुराण का मुख्यता सम्बन्ध भगवान् के वामनावतार से है। यह एक छोटा पुराण है। इसमें मात्र 95 अध्याय हैं तथा 10000 श्लोक हैं। यह पुराण विष्णुपरक होने के कारण इसमें विष्णु के विभिन्न अवतारों का वर्णन होना स्वाभाविक है किन्तु इसमें वामनावतार का वर्णन विशेष रूप से हमें उपलब्ध होता है।

17. मत्स्यपुराण : यह पुराण भी पर्याप्त रूप से विस्तृत है। इसमें अध्यायों की संख्या मात्र 291 है तथा इसमें श्लोकों की संख्या 15000 के लगभग है। इस पुराण के आरम्भ में मन्वन्तर के सामान्य वर्णन के अनन्तर पितृवंश का वर्णन विशेषरूप से किया गया है। इस पुराण में बड़े ही सुन्दर उपदेश दिये गये हैं–

> विज्ञाय राजा द्विजदेशकालो दैवं त्रिकालं च तथैव वद्धध्वा।
> यायात् परं कालविदां मतेन संचिन्त्य सार्धेद्विजमन्त्रविदि्भः।। [7]

18. गरुड़पुराण : गरुड़पुराण में भगवान् विष्णु ने गरुड़ को विश्व की सृष्टि के विषय में बतलाया है। इसी आधार पर इस पुराण का नाम गरुड़पुराण रखा गया है। इस पुराण में 17000 श्लोक हैं तथा इसमें अध्यायों की संख्या 264 है। इस पुराण के भी दो खण्ड हैं– पूर्वखण्ड तथा उत्तरखण्ड।

19. ब्राह्माण्ड पुराण : नाम मात्र से ही ज्ञात होता है कि इस पुराण में ब्रह्माण्ड का वर्णन होने के कारण इसका नाम ब्रह्माण्ड पुराण पड़ा है। भुवनकोष का वर्णन हमें प्रायः हर एक पुराण में उपलब्ध होता है। किन्तु इस पुराण में सम्पूर्ण विश्व का वर्णन हमें उपलब्ध होता है। नारद पुराण से हमें ज्ञात होता है कि प्रारम्भ में ब्रह्माण्ड पुराण के 12000 श्लोक थे तथा प्रक्रिया, अनुशंग, उपोद्घात तथा उपसंहार नामक इसके चार पाद थे। इस प्रकार इन चारों पुराणों का विषय सूची नारद पुराण में ही दी गई है।[8]

निष्कर्षतः इनसे निष्कर्ष निकलता है कि पुराणों की संख्या मात्र 18 है पर उनमें विभिन्न प्रकार की विद्याओं का ज्ञान इस संसार को प्रकाशमान बनाता है जो भारतीय समाज के लिए विशेष महत्व रखता है। मानवजीवन का कल्याण इसके ज्ञान से ही सम्भव है।

20. संकेत ग्रन्थ सूची

1. बलदेव उपाध्याय, पुराणविमर्श, पृ. 140
2. तारिणीश झा, अ.पु., पृ. 383/52
3. कू.पु., पृ. 110/8
4. श्री मुनिलाल गुप्त, वि.पु., पृ. 56/18
5. नेमिचन्द्र शास्त्री, भा.ज्यो., पृ. 180
6. नेमिचन्द्र शास्त्री भा.ज्यो., पृ. 242
7. पं. दीना नाथ झा, प.पु., पृ. 87/10
8. नेमिचन्द्र शास्त्री भा.ज्यो., पृ. 190